वर्ष 3, अंक 8 अगस्त 2019
आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक
जे 7, श्रीरामनगर, रायपुर (छ.ग.)
CHHHIN/2017/72506

किलोल

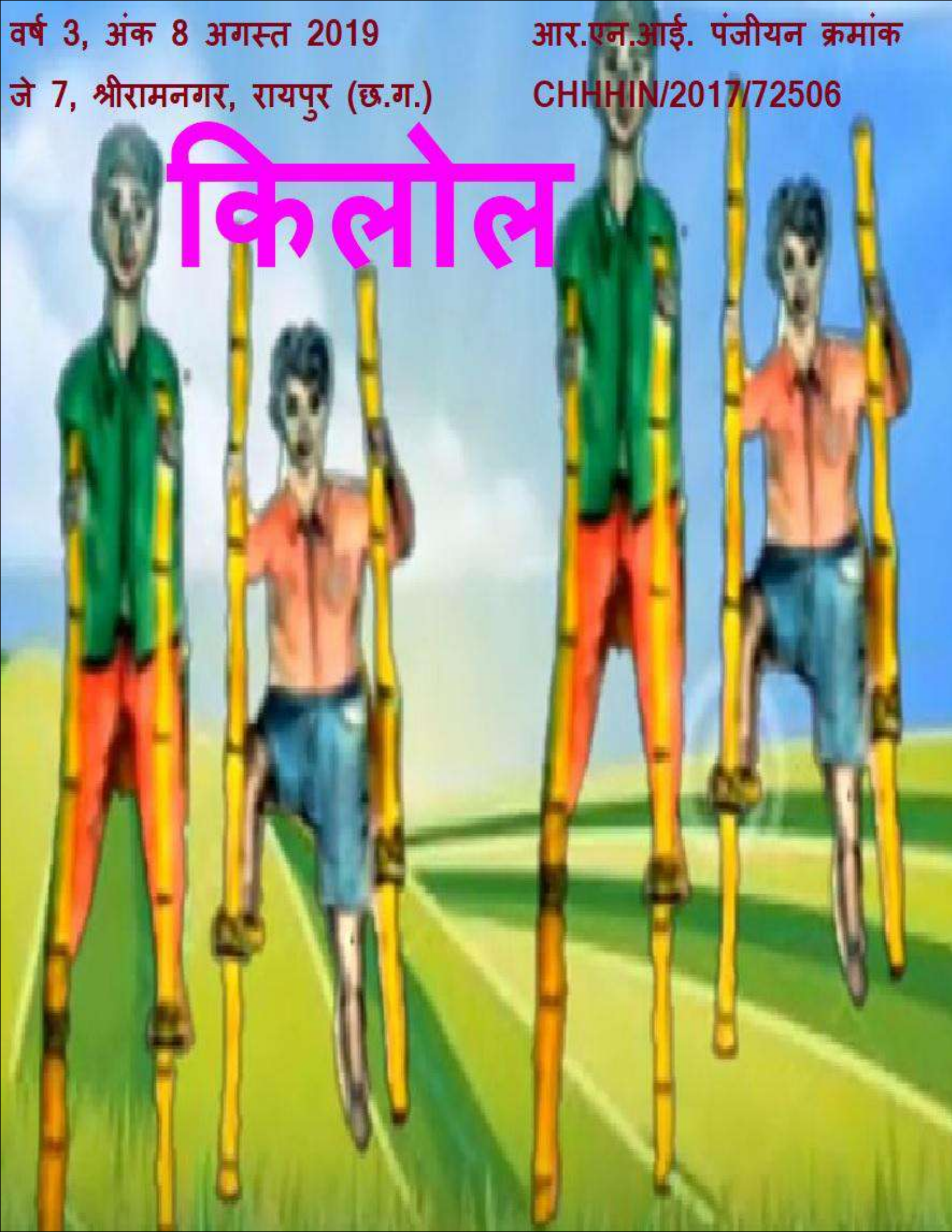

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, शेख अजहरुद्दीन

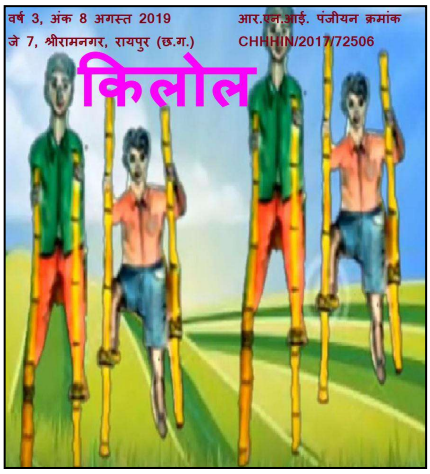

प्यारे बच्चों,

बारिश का मौसम है. हरेली का त्योहार है. और भी बहुत सारे त्योहार इसी महीने हैं. रक्षाबंधन है. और हमारे देश का सबसे बड़ा त्योहार स्वतंत्रता दिवस भी इसी महीने हैं. आप सबको स्वतंत्रता दिवस की ढ़ेर सारी शुभकामनाएं.

खेलने के साथ आप पढ़ाई में भी व्यस्त होंगे. समय बीतते देर नहीं लगती है. देखते-देखते परीक्षा का समय पास आ जायेगा. सब मिलकर खूब पढ़ाई करो.

शिक्षकों के लिये एक नई पहल मैने इसी माह से की है. आप अगर सरकारी स्कूल में पढ़ाते हें और आप समझते हें कि आपके स्कूल ने कुछ अच्छा किया है जिसे सबको जानना चाहिए तो मैं आपके स्कूल की नि:शुल्क वेबसाइट बनाकर आपकी सहायता कर सकता हूं.

किलोल के लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. हमेशा की तरह किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. सभी बच्चों को ढ़ेर सा प्यार.

आलोक शुक्ला

अनुक्रमणिका

अड़हा टूरा के कहानी.....7

इनाम.....9

भविष्य की चिंता.....11

सच्चा गहना.....13

महानदी गंगे.....16

हरेली तिहार अउ परंपरा.....19

सबरी के जूठा बोइर.....22

मुअखरा कैलेंडर.....25

कहानी पूरी करो.....27

चित्र देखकर कहानी लिखो.....31

जीना सीखो (कुकुभ छंद).....35

तितली.....37

तिरंगा.....39

तेरी यादें.....41

दिन आये स्कूल के.....42

पानी.....44

फुग्गे.....46

बहुत सुहानी है बरसात (विधा- जयकारी छंद) 47
बेटियाँ 49
रक्षाबंधन 51
वर्षा ऋतु आई है 53
सूरज आया 55
हरियाली 57
पहेलियाँ 58
May You Fly 60
चुटकुले 61
नवाचार - कला कौशल 62
नवाचार – शैक्षणिक भ्रमण 64
संस्मरण - व्यावहारिक ज्ञान 66
अजादी बर 67
इही ल मया कहिथे न 69
करिया बादर 71
किसानी के दिन आगे 73
चंद्रयान-दू (सरसी छन्द) 75
चीला रोटी 77

छत्तीसगढ़ के नारी.....78
झड़ी.....80
नानचुन लयिका.....82
पानी बरसा दे.....84
बम्बरी के फूल.....85
बरस जा बादर कारी.....87
बरसा के दिन आवत हे.....89
बरसा.....91
विज्ञान के खेल - फूंक मारकर ईंट उठाना.....92
बरसात.....93
बरसीस बादर.....95
बादर लबरा होगे.....96
मय महानदी के पानी अंव.....98
मोर गांव.....101
मोर दुलौरिन दाई.....103
राजा के दरबार.....106
सावन के झूला.....108
सावन के मजा आवत न इये.....109

सोन चिरई 111

स्कूल जाबो 112

स्कूल मोर मितान.....114

कला – कागज़ की हिलने वाली चिड़ियां 116

भाखा जनउला.....117

अड़हा टूरा के कहानी

लेखक - मनोज कश्यप

हमर गाँव म एक झन जुवर्रा टूरा रहिस हे. मूड़ ला अडबड खजुवाय अउ लडर-बडर गोठियावय. ओखर मूड माँ बहुत अकन ले जुवा अउ लीख फरे रहाय. एक झन मितान हा ओला बताइस - आज-कल जुवा-लीख ला मारे बर नवा शेम्पू आय हे. एको बेर लगा लेते, तोर समस्या हा हल हो जाही. बने साफ-सुथरा रहे कर भाई! मितान हा ओला शरीर के साफ-सफाई के महत्व ल बताइस. जुवर्रा टूरा हा तरिया म नहाय ला जात रहिस. ओला मितान के बात सुरता आइस. जात-जात सोचिस आज शेम्पू लगा के बने खल-खल ले नहाहूँ, तरिया मा डुबकहूँ अउ मूड ला फरियाहू वो हा दुकान म जाके कहिस-ऐ भाई मोला बाल सफा करेके शेम्पू देबे. दुकानदार मेर ले वो हा शेम्पू लेके तरिया चल दिस. शेम्पू लगा के, बने मूड ला मींज के नहाइस बपुरा हा, तरिया माँ बूड के जइसे निकलिस अउ सोचिस, आज तो मोर चुंदी हा शाहरुख़ सही बने फ़रियागे होही. अरे .....ये का? मूड म जइसने हाथ लगाइस, वोखर चूंदी मन सब झरगे रहाय. रोवन लागिस बिचारा अउ मितान ला अडबड गारी देवन लागिस. टावेल-गमछा माँ अपन मूड ला तोप के गारी देवत-देवत

मितान- घर गईस. मितान हा ओला नहीं चीन्हीस. तय कोन हस, मोरे घर माँ आके मोहि ला गारी देवत हस. अड़हा टूरा अपन नाव बताइस अउ अपन मूड ला देखाइस अरे..... ये का? तोर तो सब्बो चूंदी सफा होगे. चल तो दुकानदार ला धमकाबो, वो हा का शेम्पू दे रहिस, दुनों झन दुकान माँ गईंन. दुकानदार हा बताइस -बाबू! तयं हा बाल सफा करे बर शेम्पू मांगे रहे. बाल साफ करे बर मांगे रहिते तो वइसन शेम्पू देये रहितौं. मोर कुछु गलती नहीं हे. अड़हा बिचारा का करय? थोरिक भी पढ़े-लिखे रहितिस त ये नौबत नहीं आतिस.

शिक्षा:- पढ़े-लिखे के बात ला सुन के, मूड़ी ला झन खजुवावौ, बेटा-बेटी मा फरक झन करव, सबला पढ़ावौ -लिखावौ.

इनाम

लेखक - त्रिलोकी ताम्रकार

मोनू बस्ता रखते हुए बोली - "बाबू आज हम लोग स्कूल में पौधा लगाए हैं."

बाबू - "अच्छा ! और ?"

"और... गुरुजी बोले हैं कि पौधा बड़ा होगा तो इनाम मिलेगा."

"ये तो अच्छी बात है." उसके पिताजी बोले.

मोनू अपनी मां को बताते हुए बोली - "मां मैं खेलने जा रही हूं."

"मोनू रुको, मेरे साथ चलना" - उसके बाबू ने कहा.

थोड़ी देर में मोनू अपने पिताजी के साथ चलने लगी. थोड़ी ही दूर पर एक पीपल का पेड़ था. मोनू के बाबू ने उसको हाथ जोड़कर प्रणाम किया, जिसे देख मोनू ने

अपने पिताजी से पूछा - "आपने इस पेड़ को प्रणाम क्यों किया?" बाबू बोले- "जानती हो ये पेड़ किसने लगाया था? मोनू- ने कहा - "नहीं ! "

"मेरे दादाजी ने."

"अच्छा ! " - मोनू बोली.

पास में ही कोठार था. कोठार में आम का बड़ा पेड़ था. पिताजी उसे मोनू को दिखाते हुए - "बोले ये आम का पेड़ मेरे पिताजी यानि तेरे दादाजी ने मेरे जन्मदिन पर लगाया था और ये जामुन का पेड़ मैंने तुम्हारे जन्मदिन पर लगाया था. देखो, कितना बड़ा हो गया है. अब तो ये फल भी देने लगा है. पौधा लगाने के बाद सुरक्षा और देख-रेख जरूरी है."

मोनू बड़े ध्यान से पिताजी की बातें सुन रही थी.

पिताजी ने पूछा - "जानती हो मोनू, पेड़-पौधे हमें क्या इनाम देते हैं?"

मोनू से पूछा:- "क्या इनाम देते हैं?"

"पेड़ हमें छाया फल फूल लकड़ी और हवा देते हैं. यही सबसे बड़ा इनाम है."

बातें करते-करते दोनों आगे बढ़े जहां कुछ बच्चे खेल रहे थ. उन्हें देखकर मोनू उधर दौड़ते हुए बोली - "कल मैं अपने पौधे को कांटे से घेर दूंगी."

उसके पिताजी मुस्कुराते हुए घर वापस हो गए.

भविष्य की चिंता

लेखक एवं चित्र - इंद्रभान सिंह कंवर

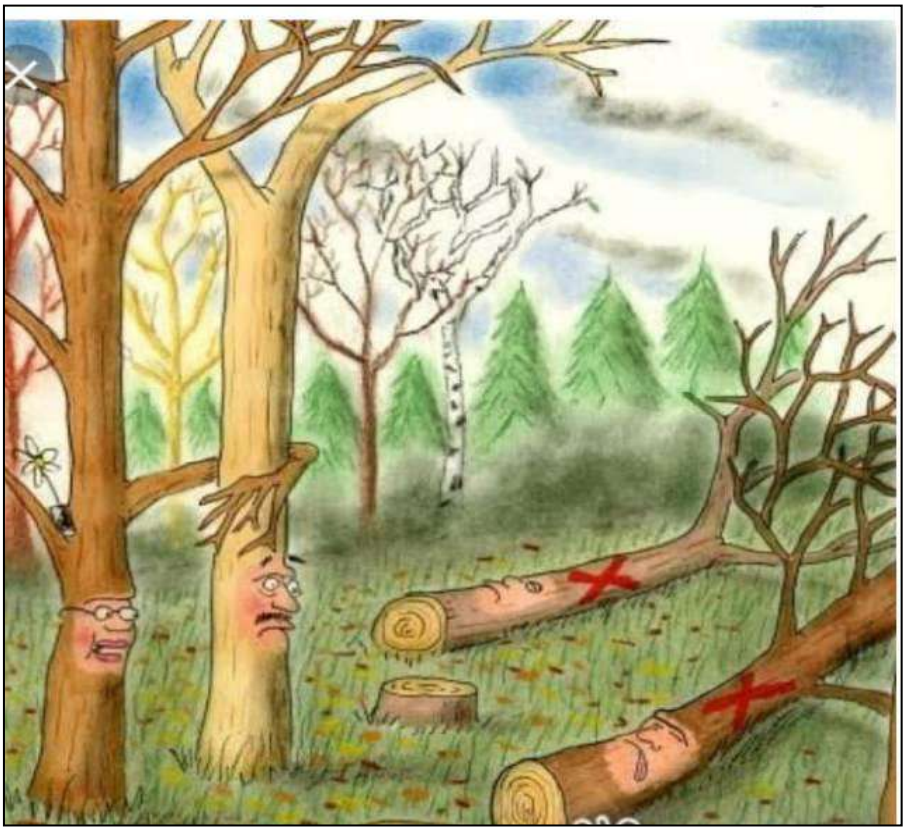

एक दिन की बात है तीन लकड़हारे लकड़ी काटने के लिए जंगल गए हुए थे. जंगल के पेड़ों को काटकर अपने लिए लकड़ियां एकत्रित कर रहे थे. लकड़ी काटते काटते दोपहर हो गई. काफी गर्मी थी. धूप हो चुकी थी. सभी ने आराम करने की सोची और जिस पेड़ को वह काट रहे थे उसी पेड़ की शीतल छाया में आराम करने लगे.

भरी दोपहरी का समय था. जंगल में चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था. सन्नाटे की शांति में तीनों को गहरी नींद आ गई तभी तीनों को किसी के रोने की आवाज सुनाई दी. तीनों डर के मारे आंख बंद कर चुपचाप लेटे रहकर सुनने लगे.

वह रोने की आवाज उसी पेड़ की थी, जिसे वो काट रहे थे. उस पेड़ के पड़ोसी पेड़ ने उसका हालचाल पूछते हुए कहा - ''क्यों रो रहे हो, ज्यादा दर्द हो रहा है क्या?'' तब उस पेड़ ने कहा - ''नहीं दर्द हमें कहां? हम तो बने ही है सदैव दूसरों की सेवा के लिए.'' दूसरे पेड़ ने पूछा - ''तो फिर क्यों रो रहे हो?'' तब पहले पेड़ ने कहा - ''मैं तो इन इंसानों की भविष्य की चिंता करके रो रहा हूं. जिस तेज गति से यह अपनी उन्नति और उपयोगिता के लिए हमें काट रहे है, कुछ दिनों बाद तो हम लोग समाप्त हो जाएंगे. फिर इन बेचारे इंसानों का क्या होगा? उनका तो जीना बेहाल हो जाएगा. ना दिन को चैन से रह पाएंगे और ना रात को सुकून से सो पाएंगे. बस दिन रात तड़पते रहेंगे.'' तब दूसरे पेड़ ने कहा - ''तड़पने दो. यह हमें कष्ट दे रहे हैं, तो इन्हें भी तो कुछ कष्ट होना चाहिए.'' तब फिर उस कटे हुए पेड़ ने कहा - ''नहीं मित्र हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए. हमारा तो निर्माण इन लोगों की भलाई के लिए हैं, न कि अपने लिए.''

यह सभी बातें वो लकड़हारे सुन रहे थे. उन्हें यह जानकर काफी दुख हुआ कि जिन पेड़ों को अपने स्वार्थ के लिए निर्दयता के साथ वो काट रहे हैं, वे पेड़ किस तरह से इंसानों की निस्वार्थ सेवा करते हैं. उस दिन के बाद उन तीनों ने पेड़ काटने का काम छोड़कर पेड़ लगाने का काम शुरू कर दिया और दूसरे लोगों में भी पेड़ लगाने की अलख जगाने लगे.

सीख: पेड़ लगाओ-अपने आप को बचाओ, अपनों को बचाओ, आने वाली पीढ़ी को बचाओ.

सच्चा गहना

लेखिका - श्वेता तिवारी

मालती और शांति दो बहने हैं. आज उनकी सहेली लता का जन्मदिन है उसने अपनी सभी सहेलियों को अपने घर दावत पर बुलाया है. दोनों बहनों ने कानों में झुमके हाथों में सुंदर कंगन गले में हार आदि पहना और खूब सज धज कर वहां गई. वहां लता ने खूब प्यार से उनका तथा अन्य अतिथियों का स्वागत किया जन्मदिन पर उपस्थित बच्चों ने पहले बगीचे में कुछ खेल खेलें फिर गाने गाए और कुछ बच्चों ने नृत्य भी किया सभी ने लता को उपहार दिए तो उसने झुककर सबको धन्यवाद दिया. इसके बाद सभी को केक मिठाइयां और शरबत चाय आदि पिलाई गई इसके बाद सभी अपने अपने घर चले गए. मालती और शांति भी घर आए. तब उनकी दादी उनसे मिलने आई थी. उनसे दावत के बारे में पूछा तो खूब

प्रशंसा की. परंतु उन्हें इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि उनके जन्मदिन पर तो उन्हें कुछ ना कुछ बहुमूल्य आभूषण मां पिता जी देते हैं पर लता के पिताजी ने उसे कुछ बहुमूल्य पुस्तकें ही उपहार में दी थीं. लता ने नए कपड़े तो पहने थे पर वे बहुत महंगे नहीं लगते थे. उन्होंने कहा दादी लगता है वे बड़े कंजूस हैं. लता के पास तो एक भी आभूषण नहीं है.

इस पर दादी ने कहा नहीं प्यारी बच्चियों, ऐसी बात नहीं. यह जो आभूषण गहने तुम दोनों ने पहने हैं यह दिखावटी हैं. इनमें केवल शरीर की सुंदरता को बढ़ाया जा सकता है. मन की सुंदरता को बढ़ाने वाले आभूषण हो तो इन सब आभूषणों का कोई महत्व नहीं. मालती और शांति दोनों ने एक साथ पूछा तो वह कैसे आभूषण होते हैं. दादी बताइए. अगर वे आभूषण इन से भी सुंदर है तो हम इन्हें छोड़ कर उन्हें ही पहने. दादी बोली सच अगर ऐसी बात है तो सुनो. अच्छी बातें अच्छा व्यवहार ऐसे गुण हैं जो ग्रुप से कोई व्यक्ति को भी सुंदर बना देते हैं. देखो ना यह जो तुमने हाथों में कंगन अंगूठी आदि पहने हैं, नाखूनों को सजाया है, इससे तुम्हारे हाथ सुंदर लग तो रहे हैं परंतु अगर तुम इन हाथों से गरीब गरीबों की दुखियों की मदद करो तो वह हाथों का सच्चा भूषण है. कोई गिर जाए तो उसे अपने हाथों का सहारा देकर उठाओ. किसी बूढ़े अपाहिज की मदद करो. गरीबों को दान दो. इस तरह कानों के आभूषण कुंडल झुमके नहीं अच्छी बातें सुनना है. गले का आभूषण हार माला नहीं बल्कि अच्छी मीठी बातें बोलना है. अगर हम अच्छे काम करें तो बेशक हमारे पास आभूषण ना भी हों, तो दुख की बात नहीं, क्योंकि यह गुण सोने के आभूषण से बढ़कर हैं. विद्या तो मनुष्य का सबसे बड़ा आभूषण है. इसके रहते तो मनुष्य कहीं भी रहे धनवान रहेगा क्योंकि विद्या सबसे बड़ा धन है. यह तो खर्च करने पर और भी बढ़ता है. विदेश में भी मनुष्य अकेला नहीं

होता. विद्या युक्त मनुष्य सारे संसार में पूजा जाता है, जबकि राजा की पूजा तो सिर्फ उसी के देश में होती है. यह सब बातें दोनों ने बहुत ध्यान से सुनी और दादी के चुप होते ही बोली - वाह दादी आपने तो आज हमारी आंखें खोल दीं. आज से हम भी इस बात को कभी नहीं भूलेंगे. अब हम सच्चे आभूषण पहनने का प्रयत्न करेंगे और सादा जीवन उच्च विचार का पालन करेंगे.

महानदी गंगे

लेखक - योगेश ध्रुव "भीम"

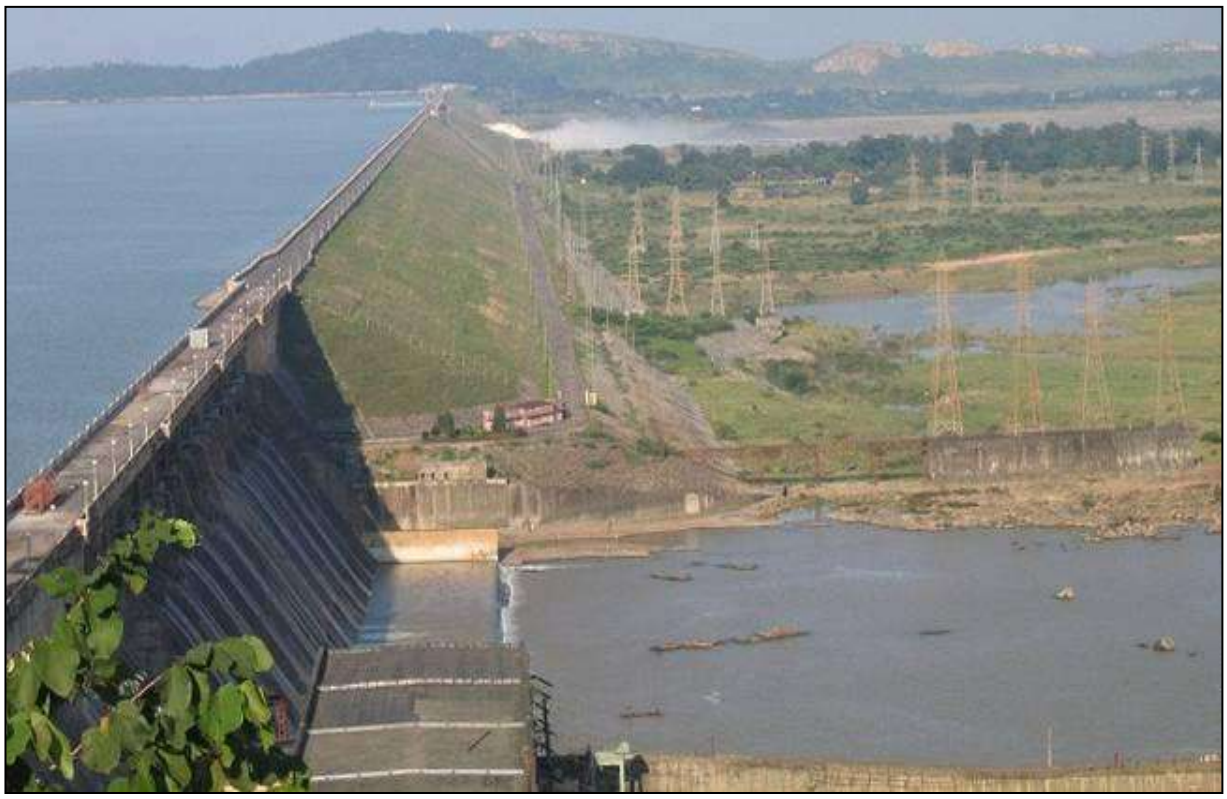

तय पियास घलो बुझाथस छत्तीसगढ़ महतारी के |
तोला कईथे चित्रोत्पला नीलोत्पला महानदी गंगे ||

हमर छत्तीसगढ़ राज के सबले बड़का नदीया महानदी आय.अउ ये ह धमतरी जिला के सिहावा नगरी तहसील के सिहावा पहाड़ ले निकले हावे.अउ इहि पहाड़ में घलो हमर छत्तीसगढ़ के महान रिसि सिंगी ह तपस्या घलो करे रिहिस.पहाड़ के ऊपर म नानकुन कुंड ले पानी के धार ह बोहावत रइथे.अउ इहि ह आगु डहर जाके बड़का नदी के रूप ल धर लेहे.अउ ये ह कई जुग ले बोहावत घलो हावे.एखरो नाव हर अलग अलग जुग म अन्ते अन्ते रिहिस हावे.कोन्हों समय म "चित्रोत्पला,

नीलोत्पला, कनकन्दनी" घलो रहाय.अउ महानदी नाव हर रिसि सिंगी के गुणवान अउ बात मनइया चेला महानन्दा के त्याग तपस्या अउ बलिदान के सेती रिसि ह खुस होके अपन चेला के नाव ल अमर करे के खातिर अपन बेटी नदी के नाव ल घलो महानदी रखे रिहिस तब ले आज तक महानदी के नाव ले जाने जाथे.

त्याग करिस तोर चेला महानंदा ह घलो सिंगी |
नाव रखेच घलो तोर बेटी के महानदी गंगे ||

"यहु नदी ल हमर राज के जीवन दायनी गंगा घलो कहे जाथे" जनश्रुति के अनुसार ले सुनें ल मिलथे की महानदी ह जब अपन कुंड ले निकलथे त ओ ह उत्ती डहर जाएल लगथे त ओला रिसि ह देख के कथे देख बेटी ओती तेहर जाबे त तोर मान गाउन नई होए.तय हर लउट जा.अतको बात ल सुन के दाई हर फारसिया गांव ले माहामाया दाई के चरण पखार के वापिस दक्छिन दिशा म आ जथे.कांकेर जिला ले तोर धार बोहावत भण्डार दिशा कोती वापीस धमतरी जिला म तय आथस माता.अउ तोरेच धार ल छेक के सन 1978 म गंगरेल गाँव म पण्डित रविशंकर शुक्ल सागर परियोजना नाव ले बाँध घलो बने हे.ये बांध ल बनाये म ओ जगह के 52 गांव ल उसाले ल घलो पडिस. येखर पानी ह आस पास के खेत के सिचाई करथे.अउ भिलाई के स्पात कारखाना ल पानी घलो देथे.जब तोर लहरा मारत धार हा आगु बढते त रुद्री म घलो सन1915 म पिकप वीयर(डॉ खूबचंद बघेल परियोजना) बांध बने हावे.तेहर माता अपन अमृत रूपी जल ले हमर छत्तीसगढ़ महतारी के पियास ल घलो बुझाथस. तेखरे सेती तोला "हमर राज के गंगा कहे गे हावे" तेहर इहां के जीवन रेखा हरस.ते ह रकसहू ले भंडार डहर बोहावत आथस तोर संग म पैरी अउ सोंढूर नदिया के धार ह राजिम म एक जगह मिल जथे जेन ल तिरवेनी संगम घलो कहे गेहे.राजिम में भगवान कुलेश्वर अउ राजिमलोचन के तोला आसीस घलो मिलथे.तोर खड़ में माता राजिम,सिरपुर,आरंग अउ शिवरीनारायण जइसे शहर ह बसे हावे.तेहर दाई बड़का नदिया घलो अस.तोर लंबई ह हमर राज म 286 किलोमीटर अउ पुरेच लंम्बाई घलो 864 किलोमीटर हावे.तोर बिकराल धार ह बोहावत महतारी धमतरी जिला ले धरती दाई के पियास बुझावत

रइपुर,महासमुंद,बलोदाबजारअउ जांजगिरचापा डहर जाथो.तोरेच खड़ म शिवरीनारायण जिईसे पवित्तर शहर हाबे.इहाँ ले तोर धार उत्ती भंडार होत बोहावत उड़ीसा के संबलपुर जिला ले होवत कटक म पहुँचथो अउ उही जगह म तोर बोहावत धार ल छेक के सबले लंबा हीराकुंड बांध घलो बनाये हावे.तोर अमृत रूपी पानी ले उड़ीसा के पियास ल घलो बुझाथो.अउ आखिर बेरा म तोर लहरा मारत धार ह महतारी बंगाल के खाड़ी म गिर के समुंदर म जा के समा जथे.

सबो के दुख हर तारनी महानदी गंगे माता |
छत्तीसगढ़ म तय जनम धरे पियास बुझाये महतारी |
बंगाल खाड़ी म जाके समुन्दर म समाये महानदी गंगे ||

हरेली तिहार अउ परंपरा

लेखक - महेन्द्र देवांगन "माटी"

सावन महिना के सुरू होते साठ चारो डाहर हरियर - हरियर दिखे ल धर लेथे. रूख, राई, खेत-खार सब डाहर जेती देखबे तेती चारो मुड़ा हरियाली छाय रहिथे. नदियाँ-नरवा मन में पानी बोहात रहिथे अउ मेचका मन टरर-टरर नरियावत रहिथे. सब डाहर हरियर-हरियर देखके मन ह तक हरिया जाथे. इही सब ल देखके किसान मन ह सावन महिना के अंधियारी पाँख के अमावस्या के दिन हरेली तिहार मनाथे. हरेली तिहार के दिन किसान मन ह बिहनिया ले उठ के अपन गाय-बइला मन ल गोठान में भेज देथे. ऊंहा राऊत मन ह वोला राखत रहिथे.

<u>लोंदी खवाय के परम्परा</u> - हरेली तिहार के दिन गाय बइला ल लोंदी खवाय के परम्परा हे. किसान मन ह गेंहू के आटा ल सान के लोंदी बनाथे. अंडापान या खम्हार पत्ता में खड़ा नमक के पोटली बना के गाय बइला मन ल खवाथे. साथ में दार चाँऊर लेगे रहिथे तेला पहटिया (चरवाहा) ल देथे. ओकर बदला पहटिया मन दसमूल कांदा अऊ जंगली गोंदली ल परसाद के रूप में देथे. तेला घर भर के माई पिल्ला बाँट के खाथे.

<u>औजार मन ल पूजा करे के परम्परा</u> - हरेली के दिन किसान मन घर जतका खेती किसानी के औजार रहिथे जैसे-नांगर, बसुला, हथौड़ी, खुरपी, रापा, सब्बल, कुदारी, आदि जतका समान रहिथे सब ल धो मांज के एक जगा रखथे अऊ घर भर के सब झन ओकर पूजा करथे.

<u>चीला चढ़ाये के परम्परा</u> - आज के दिन किसान मन ह खेत में चीला चढ़हाथे अऊ ओला परसाद के रुप में बांटथे. गरम-गरम चीला ल चटनी के संग खाय ले मजा आ जाथे.

<u>नीम डारा खोंचे के परम्परा</u> - आज के दिन राऊत मन या बइगा मन ह घर-घर जाके नीम के डारा ल दरवाजा में खोंचथे. एकर खोंचे से घर में भूत परेत या कोई भी परकार के जादू-टोना घर में परवेश नई करे, अइसे माने जाथे.

<u>गेंड़ी बनाय के परम्परा</u> - हरेली तिहार के लइका मन बहुत इंतजार करत रहिथे. काबर के आज के दिन लइका मन ल गेंड़ी चढ़हे बर मिलथे. गेंड़ी ल लंबा-लंबा बांस के बनाये जाथे अऊ बीच में पाँव रखे बर पाऊ बनाये जाथे. पहिली गेड़ी के पूजा करे जाथे. ताहन लइका मन ह चढ़के अब्बड़ मजा पाथे.

<u>खेल खेले के परम्परा</u> - हरेली के दिन गाँव के मन ह एक जगह सकलाथे अऊ किसम-किसम के खेल खेलके आनंद उठाथे. जैसे - गेड़ी दउड़, बइला दंउड, कबड्डी, नरियर फेंकउला आदि.

<u>देवी-देवता ल मनाय के परम्परा</u> - हरेली के दिन गाँव के जतका देवी - देवता हे ओकर पूजा करे जाथे अऊ कोनो परकार के अनिष्ट गाँव में झन होय कहिके प्रार्थना करे जाथे.

आज के दिन से ही गाँव में बइगा मन अपन चेला मन ल मंतर सिखाय के शुरू करथे. ग्रामीण क्षेत्र में मान्यता हे कि आज के दिन रात में टोनही मन अब्बड़ झूपथे. एकरे पाय कोनो आदमी रातकुन अपन घर से नइ निकले. लेकिन ये अंधविश्वास ह अब खतम होवत जात हे. हमर छत्तीसगढ़ में ये हरेली तिहार ल किसान मन ह बढ़िया धूमधाम से मनाथे. ये तिहार ह सबला मिलजुल के रहे के अउ अपन काम ल लगन से करे के संदेश देथे.

सबरी के जूठा बोइर

लेखक - योगेश ध्रुव "भीम"

चरन नवाओ मोर सबरी दाई |
छत्तीसगढ़ के तय साधवी ओ ||

सोन के मिरगा भेस धरे मारीच राक्छस ल मार के राम अउ लच्छमन ह अपन पर्णकुटी म आथे.त ओ मन ह सीता ल चिल्लाय लागथे. सीता के कोन्हों डहर आरो पता नई मिले .त ओ मन ल अड़ बड़ दुख होथे. अउ जंगल जंगल म एती ओती बहिय्या भूतहा कस खोजन लागथे. उही बेरा रददा म एक झन तड़फथ जटायु ह घलो मिलथे. ओहर ह बेसुध भुइय्या म पड़े रथे. जटायु ह सीता माता ल लेगत देख ओखर रक्छा खातिर रावण संग लड़त अपन एक ठन डेना ल गाँवयल पड़थे. राम हर देख के ओला पानी पियाथे त ओ ह अपन सुध म आ जथे. सुध म आये के

बाद म जटायु ह रावण ले सीता ल अपन पुष्पक विमान म बैठा के ले जाए के घटना ल घलो राम ल बताथे. अउ उहि बेरा म जटायु ह राम के गोद म अपनेच परान ल तियाग देथे.

पंछी होके तेहर जुद्ध करेस घलो रावण ले |
नाव अमर होगे परान तियागे गोद राम के ||

राम ल अड़ बड़ दुख घलो होथे अउ अपनेच हाथ ले जटायु के मौद माटी ल करथे. तभेच आगु डहर दोनो भाई हर सीता ल खोजे बर जाथे. रददा म जावत एक दिन ओ मन ल एक झिंन डोकरी हर मिलथे. ओखर नाव हर सबरी रहय. ओहर भीलनी जाती के घलो रहय.

तोर अगोरा म परभु चुन्दी घलो ह पाक गे |
कन्हिया झुकता आँखि मा अंधरौटी छागे ||

सबरी दाई ह राम ल अपन कुटिया म आय बर नेवता घलो देथे. ओखर कुटिया ह पम्पा सरोवर के पार म मतंग जंगल म रहय. अउ वहू जंगल म बोइर के अबड़ पेड़ घलो रहय. राम लच्छमन के सबरी दाई ह अड़बड़ मानगोन घलो करथे.

आय हावे तोर दुवारी म भगवान घलो राम |
उद्धार करे बर तोर बने बने तय खवाले ||

ओहर बोइर ल चीख चीख के देखथे मीठ अउ कड़हा बोइर मन ल अलगेच अलग कर राम बर सकेल के घलो रखे रथे. परेम के भावना ले जूठा बोइर ल सबरी दाई हर राम के थारी में परोस घलो देथे. ओहर अबड़ भोली घलो रहाय. ओकर परेम ह भगवान राम बर भारी रहाय. राम ह घलो बिना छुआ-छुत के ओखर नेवता ल मानथे. अउ ओहर सबरी के जूठा बोइर ल परेम ले खाथे घलो. राम के नजर म घलो सबो मनखे मन एके समान रहाय. जात-पात के अधार ले कोन्हों ल छोटे बड़े समझई ल ओहर गलत माने.

जात पात के तय भेद मिटाय ओ मोरे राम |
चरण पखारे सबरी दाई शिवरीनरायन कहाय ||

ओखर बिचार म परेम ह सबो ले बड़का रहाय. सबरी दाई ह राम ल किष्किन्धा के राजा सुगरिव के बारे म बतइस अउ दोनो भाई राम लच्छमन ह पहाड़ डहर जाए बर लगिस.

तभे तो केहे गेहे

पोथी पढ़ पढ़ जग मुवा, पंडित भया न कोय |
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ||

मुअखरा कैलेंडर

प्रस्तुतकर्ता - शीला गुरुगोस्वामी

सियान मन कहिथें पण्डित के पोथी पतरा, फेर पण्डिताइन के मुअखरा. पुराना जमाना म जब कलेंडर नइ रिहिस तब हमर सियान मन तीज तिहार के पता लगाय बर अइसे कहँय :-

रथदूतिया के 15 दिन हरेली

हरेली के 15 दिन राखी

राखी के 8 दिन आठे

आठे के 8 दिन पोरा

पोरा के 3 दिन तीजा

तीजा के बिहान दिन गनेसचौथ

गनेस ठंडा करेके बिहानदिन पितरपाख

पितरपाख के बिहानदिन नवरात

नवरात के 10 दिन दसेरा

दसेरा के 20 दिन देवारी

देवारी के 10 दिन जेठोनी

अइसे हमर सियान मन बिना कलेंडर अउ पंचांग के तीज तिहार ल जान डारयँ अउ हँसी खुशी के साथ तिहार मन ल मना डारे!

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

कबूतर और बहेलिया

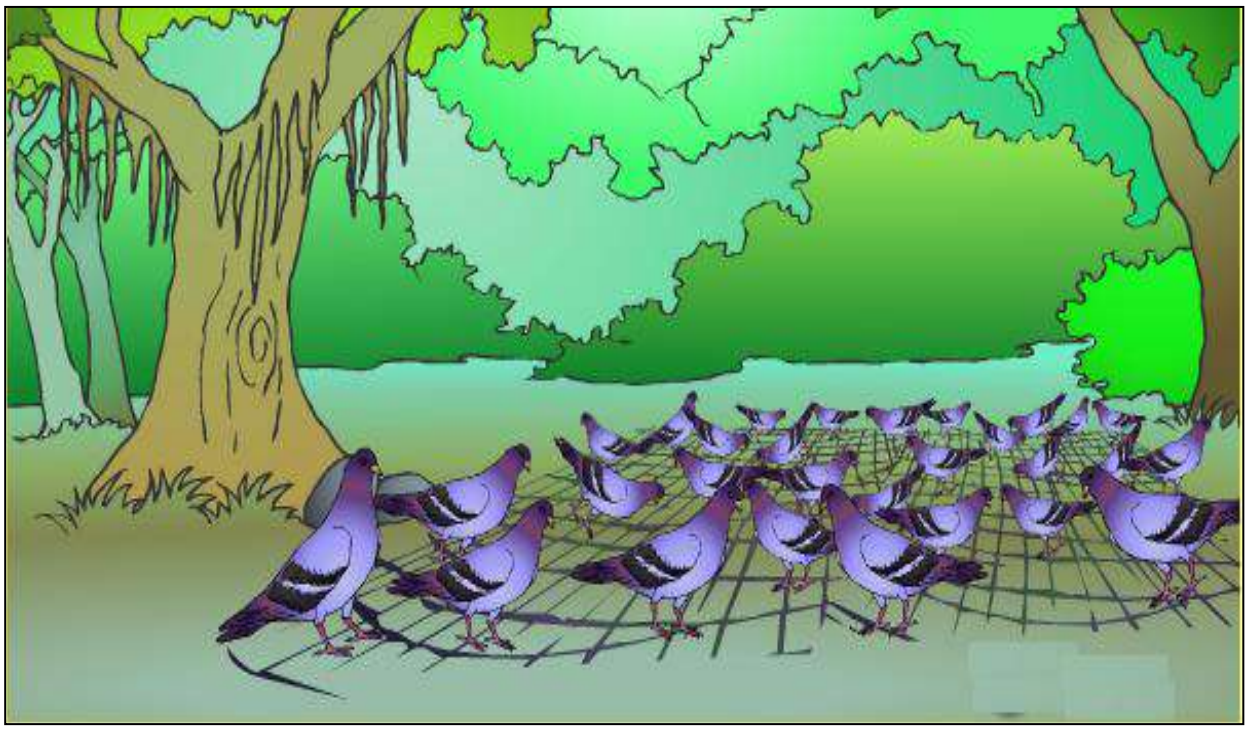

जंगल में एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ था। उस पर तरह-तरह के पक्षी रहते थे. एक दिन एक बहेलिए ने आकर उस पेड़ के नीचे अपना जाल फैला दिया और दाने डालकर स्वयं उस विशाल पेड़ के पीछे छिपकर बैठ गया.

कुछ समय बाद उधर से कबूतरों का एक झुंड आता दिखाई दिया। बहेलिए की खुशी का ठिकाना न रहा. धीरे-धीरे सारे कबूतर दानों के लालच में आकर उस स्थान पर बैठ गए, जहां पर जाल बिछा हुआ था.

कुछ समय बाद सभी कबूतर बहेलिए के बिछाए जाल में फँस गये. कबूतरों में उनका राजा चित्रग्रीव भी था। दूर से बहेलिए को आता देख चित्रग्रीव ने कहा, "मित्रों यह हमारे लिए संकट की घड़ी है. किन्तु हमें घबराना नहीं चाहिए. संकट की इस घडी का हमें मिलकर मुकाबला करना चाहिए. तभी इस संकट से छुटकारा मिल सकता है."

इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी

सबसे पहले चित्रग्रीव ने सभी को ढांढस बंधाया और एकजुट रहने को कहा. बाकी कबूतरों ने कहा - "हम सब तो जाल में फंसे हुए हैं. हम छोटे पक्षी उस बहेलिए का सामना कैसे कर सकते हैं?" तब चित्रग्रीव ने कहा - "आप सभी अपने अंदर छुपी ताकत को पहचाने जो आपने नाखूनों और चोंच को हथियार के रूप में हैं इस्तेमाल करें. जैसे ही बहेलिया हमें उठाने आएगा, हम सबको मिलकर अपने पंजे और चोंच से उस पर हमला करेंगे. आपको अपनी एकता और ताकत प्रदर्शित करना है." सभी ने मिलकर उस बहेलिए पर अपनी चोंच और पंजे से आक्रमण कर दिया. बहेलिया घायल हो गया. कबूतर उस जाल को ले उड़े.

इसके बाद चित्रग्रीव सभी कबूतरों को टीले के ऊपर अपने मित्र चूहे के पास ले गया. उसने चूहे से जाल को कुतरने को कहा. तब फिर चूहे ने जाल को कुतरकर सारे कबूतरों को छुटकारा दिलवाया. सभी कबूतरों ने चूहे को धन्यवाद दिया और चित्रग्रीव की जय जय कार लगाई.

सीख - कठिन परिस्थितियों में हमें घबराना नहीं चाहिए. एकजुट होकर पूरी ताकत के साथ उनका सामना करना चाहिए. एकता में ही ताकत होती है.

अगले अंक के लिये इस मज़ेदार कहानी को पूरा करके हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दीजिये. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

शरारती बंदर

राजवन में राजू बंदर की शरारतों से सभी जानवर परेशान थे. वह आए दिन सबके साथ शरारत करता था. जंगल के सभी जानवर उसे समझाते, फिर भी वह किसी की बात नहीं सुनता था. एक बार स्कूल में हिन्दी के टीचर ने राजू को जोरदार डांट लगाई. लेकिन उसने उनका भी मजाक उड़ाया. राजू ने दूसरे दिन उनकी कुर्सी पर खुजली की पत्ती रख दी, जिससे पूरे शरीर में उनको खुजली होने लगी.

राजू सिर्फ स्कूलों में ही नहीं, बल्कि घर के पड़ोसियों को भी परेशान करता था. वह पड़ोसी की भैंसों को भी तंग करता. एक दिन तो उसने भैंस की पूंछ के सारे बाल कुतर डाले. एक बार स्कूल से घर जाते समय उसे लंबा जिराफ मिला. जिराफ

लंगड़ा कर चलता था. राजू उसे लंगडू-लंगडू कहकर चिढ़ाता था. जिराफ समझाने के लिए उसके पास जा रहा था, लेकिन राजू ने सोचा शायद जिराफ उसकी पिटाई के लिए आ रहा है. उसने झट से सड़क की ओर छलांग लगा दी. सड़क पर छलांग लगाते समय राजू कार की चपेट में आ गया. जंगल के सभी जानवर वहां पर आ गए. राजू को देखने के लिए जिराफ भी वहां पर पहुंच गया.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें कई मज़ेदार कहानियां मिली हैं. उनमें से दो को हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

जादुई चिड़िया और दूधवाला

लेखक- इंद्रभान सिंह कंवर

एक था दूधवाला जो दूध लेकर प्रतिदिन बगीचे से गुजरता था. उसी बगीचे की एक पेड़ पर जादुई चिड़िया रहती थी, जो बहुत ही सुंदर गाना गाती थी. दूधवाला जब भी उसके पास से गुजरता थोड़ा सा दूध उस चिड़िया के लिए के लिए छोड़ जाता, जिसे वह चिड़िया पी जाती. इस तरह से यह प्रक्रिया प्रतिदिन चलने लगी. दोनों का एक दूसरे के प्रति काफी लगाव हो गया था.

एक दिन उस चिड़िया ने जहां पर वह दूधवाला दूध देता था उस जगह पर दो अंडे दिए. दूधवाला जब दूध लेकर आया तब चिड़िया ने अपने दोनों अंडे उसे दे दिए, और कहा इन्हे ले जाओ. दूधवाला जब उन्हे लेकर घर आया तो वह अंडे सोने के हो चुके थे. दूधवाला उन्हे पा कर खूब खुश हुआ. उन अंडों को बेचकर उससे अपनी गरीबी दूर की और अमीर बन गया. फिर भी वह प्रतिदिन उस चिड़िया को दूध पिलाने जाता रहा.

उस दूध वाले की सुधरती हालत को देखकर उसके भाई ने उससे कारण पूछा. दूध वाले ने सच बात बता दी. उसके भाई के मन में भी अमीर बनने की इच्छा हुई. वह भी प्रतिदिन अपने भाई की तरह उस चिड़िया को दूध पिलाने लगा. मगर वह ईमानदार नहीं था. वह चिड़िया को पानी मिला हुआ दूध पिलाता था. चिड़िया ने उसकी चालाकी को भांप लिया. एक दिन उसने दो अंडे उस दूधवाले को भी दिये जिसे लेकर वह घर चला गया, मगर वह अंडे सोने के नहीं हुए. दूध वाले का भाई काफी निराश व दुखी हुआ. अगले दिन वह पुनः उस चिड़िया के पास गया और शिकायत करने लगा, कि मैंने तुम्हें दूध पिलाया मगर फिर भी तुमने मुझे सोने का अंडा नहीं दिया. इस पर जादुई चिड़िया ने जवाब दिया कि तुम्हारी सेवा में लालच और बेईमानी का भाव छिपा हुआ था, जिस कारण अंडा सोने का नहीं हुआ. तुम्हारे भाई की सेवा में सच्चाई और इमानदारी थी जिसका परिणाम उसे प्राप्त हुआ. दूधवाले की भाई को सब कुछ समझ आ गया. उसने उस चिड़िया से माफी मांगी और आगे से ईमानदारी तथा सच्चाई के रास्ते पर चलने की ठानी.

सीख - किसी भी नेक कार्य को करने के पीछे यदि लालच छिपा रहता है तो परिणाम दूधवाले के भाई की तरह प्राप्त होता है. यदि सच्चाई तथा ईमानदारी होती है तो परिणाम ठीक उल्टा दूध वाले की तरह सुखद प्राप्त होता है.

आजाद पंछी

लेखक - राघवराम गेवले कक्षा पांचवीं प्रा. शाला लावर

एक गांव में एक किसान रहता था. एक दिन वो एक पेड़ के पास गया. उस पेड़ में एक चिड़िया बैठी थी. किसान ने सोचा कि यह चिड़िया कहां से उड़कर आयी है. जरूर थकी हुई है. इसीलिये पेड पर आराम कर रही है. यह बहुत सुंदर दिख रही है. लगता है अपने बच्चों के लियये खाना ढूंढ़ रही थी. यह आजाद पंछी है. इनपर कोई नियम लागू नही होते. काश हम भी इनकी तरह बिल्कुल उन्मुक्त बिना नियम-कानून के रहते. पर यह संभव नहीं है. इनकी जिन्दगी कितनी सरल दिखती है, पर वास्तव में है नहीं. मौसम परिवर्तन के कारण बेचारी को बार-बार अपना स्थान छोड़कर जाना पड़ता है. हर बार नया घर बनाना पड़ता है. हम लोग तो मजे से एक ही स्थान पर अपने पक्के मकान में रहते हैं. इनकी एक चीज़ मुझे बहुत अच्छी लगती है. वह यह है कि इन्हें कुछ करने के लिये पैसों की आवश्यकता नहीं है. ये अपने चाने-पीन की व्यवस्था भी कही से भी कर लेते हैं. हमें तो हर चीज के लिये मूल्य देने की आवश्यकता होती है.

फिर उस किसान ने सोचा कि सभी जीव अच्छे हैं. किसी भी पंछी या जीव को मारना नहीं चाहिये.

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

जीना सीखो (कुकुभ छंद)

लेखक - महेन्द्र देवांगन "माटी"

जीवन को तुम जीना सीखो, हर पल खुशी मनाओ जी ।
चाहे कितने संकट आये, कभी नहीं घबराओ जी ।।

सिक्के के दो पहलू होते, सुख दुख आनी जानी है ।
कभी खुशी तो गम भी आते, सबकी यही कहानी है ।।

होना नहीं उदास कभी भी, गीत खुशी के गाओ जी ।
चाहे कितने संकट आये, कभी नहीं घबराओ जी ।।

भेदभाव अब करना छोड़ो, सेवा का पथ अपनाओ ।
भूले भटके राह जनों को, सच्चे मारग दिखलाओ ।।

भूखे को सब भोजन देकर, प्यासे प्यास बुझाओ जी ।
चाहे कितने संकट आये, कभी नहीं घबराओ जी ।।

करते हैं जो सच्ची सेवा, कभी नहीं दुख पाते हैं ।
मिलता है आशीष उसी को, खुशियों से भर जाते हैं ।।

बाँटो प्रेम सभी में साथी, हर पल प्यार लुटाओ जी ।
चाहे कितने संकट आये, कभी नहीं घबराओ जी ।।

माटी का ये जीवन प्यारे, माटी में मिल जायेगा ।
मिट जायेगी सारी हस्ती, नाम यहीं रह जायेगा ।।

नेक काम सब करते जाओ, मन में पाप न लाओ जी ।
चाहे कितने संकट आये, कभी नहीं घबराओ जी ।।

तितली

लेखक - बलदाऊ राम साहू

तितली आई कहीं से उठकर

भौंरों ने देखा तब मुड़कर।

रंग - बिरंगी पंखों वाली

कुछ पीली कुछ है कली।

फूलों पर आकर बैठ गईं

वे रस चूसकर ऐठ गईं।

भौंरे तो काले-काले थे,

मदमस्त मौले मतवाले थे।

कुछ ने तो खूब रौब दिखाया,

बाकी ने उनको समझाया ।

तिरंगा

लेखक - गिरजाशंकर अग्रवाल

तीन रंगों से सजा हुआ

है भारत की शान

हम सब की पहचान वो

तिरंगा जिसका नाम

केसरिया सफेद हरा

तीन हैं जिसके रंग

उन्नति का संदेश देता

चक्र भी जिसके संग

लहराता आसमान पर

है निराली शान

वीर सपूतों की याद दिलाता

तिरंगा जिसका नाम

ऐसे न्यारे झंडे पर

है मुझको अभिमान

भारतीयों की जान है वो

तिरंगा जिसका नाम

तेरी यादें

लेखक - महेन्द्र देवांगन 'माटी'

जैसे सूरज की किरणों से, गर्मी हमको मिलती है ।
और भोर की लाली में ही, कली डाल में खिलती है ।।
बागों में भी फूल देखकर, तितली भी इठलाती है ।
वैसे ही मन चहक उठे जब, याद तुम्हारी आती है

जैसे कलियाँ देख देखकर, भौंरे गाना गाते हैं ।
फूलों की ख़ुशबू को पाकर, लोग सभी सुख पाते हैं ।।
बारिश की पहिली बूँदों से, सौंधी ख़ुशबू आती है ।
वैसे ही मन चहक उठे जब, याद तुम्हारी आती है ।।

दिन आये स्कूल के

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

चुन्नू मुन्नू रानू गीतू
बब्बू शिब्बू मोनू मीतू
चलो शरारत बन्द करो
अब देखो बस्ता खोल के
बीत गयी गर्मी की छूट्टी
दिन आये स्कूल के...

नयी ड्रेस नई नई किताबें
मिलकर मन को भाएंगे
रंग बिरंगे चित्र तुम्हारे
मन में ही छा जाएंगे
नये-नये और मित्र बनेंगे
घर आँगन से दूर के
बीत गयी गर्मी की छुट्टी

दिन आये स्कूल के...
रंग-बिरंगी चित्र लगे है
कक्षा की दीवार में
दाल भात और ताजी सब्जी
मिलेंगे आहार में
नही झगड़ना, लड़ना भिड़ना
मेरे बच्चे भूल के
लगा हुआ है झूला आँगन
आना उसमें झूल के
बीत गई गर्मी की छुट्टी.....!!

मास्टर जी है बड़े निराले
बात नए बतलायेंगे
कभी कहानी बन्दर वाली
कभी गीत मनोहर गायेंगे
जोड़-घटाना,गुना-भाग भी
सिखलाते है खेल में
बीत गयी.....!!

पानी

लेखिका एवं चित्र - स्नेहलता "स्नेह"

जीवन का संचार है पानी

रोगों का उपचार है पानी

देह के भीतर देह के बाहर

श्वांसो का आधार है पानी

सूखती नदियाँ देख रही हूँ

बहता अश्रुधार है पानी

मैली नदियाँ देख स्वयं को

कहती हैं बीमार है पानी

मानव खेले इस सृष्टि से

सचमुच में लाचार है पानी

जल दोहन और वृक्ष कटाई

जीवन दूभर यार है पानी

बेशकीमती जल की बूँदे

धरती का श्रृंगार है पानी

फुग्गे

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

नन्ही-नन्ही छोटी प्यारी
पीकर हवा बड़ी मतवाली
लाल,गुलाबी ,काली,पीली
हरी, बैगनी ,सादी ,नीली
छोटी,मोटी,लम्बी, चौड़ी
बड़ी सेब और दिल की जैसी
तनी रबड़ की डोरी उछले
तनकर छन-छन जिसमें बोले
गेंद बने कभी घर आँगन
बिना पंख ही उड़े आसमाँ
मेलो की है रौनक यह
बचपन को है भाता
चुन्नू मुन्नू बबली पिंटू
सबका मस्ती भरा पिटारा...

बहुत सुहानी है बरसात (विधा- जयकारी छंद)

लेखिका - स्नेहलता "स्नेह"

काले बादल छाये आज|

बहुत सुहानी है बरसात||

वन में नाचे सुन्दर मोर |

यमुना तीरे है चितचोर||

करते बरखा में मनुहार|

चातक पाखी रहा पुकार||

स्वाती की है पावन बूँद |

पीता चातक आँखें मूँद||

गिरी आज पहली बरसात|

सौंधी महकी धरती मात||

पौध लगाकर डालो खाद|

तभी रहे धरती आबाद||

पंछी गाते राग मल्हार|

हरा भरा रखना संसार||

पानी का पहचानो मोल|

बूँद बूँद इसकी अनमोल||

बेटियाँ

लेखक एवं चित्र - प्रेमचंद साव

बेटियों से ही घर में आती खुशियाँ अपार।
बेटियों के बिन अधुरा घर संसार।।
गृहस्थी के कार्यों में हाथ वह बटायें।
सभी काम-काज को मंगल कर जाये।।

जन्म हुआ बेटी का,
घर में छायीं खुशियाँ।
गुंज उठा घर आंगन,
मीठी किलकारियाँ।।

हँसती हैं जब खुलकर,
खिल उठती कलियाँ।।

चलने पर उनके,
बजे पायल छम-छम।
हाथों के कंगन,
खनकते हैं खन-खन।।
फूलों सी कोमल,
हिरनी सी चंचल,
माँ की दुलारी,
बाबुल की परियाँ।।

कल तक थीं अनपढ़,
आज टाप टेन में।
बेटों से कम नहीं
हैं हमारी बेटियाँ।
पवित्र है वह आंगन,
जिस में पली बेटियाँ।।

रक्षाबंधन

लेखिका - श्वेता तिवारी

राखी भेज रही हूं भैया

सावन की पूनम को आज

जनम जनम तक रखना भैया

मेरी इस राखी की लाज

नहीं साज आडंबर है

बस स्नेह सजे दो धागे हैं

नहीं चतुरता सुघराई हैं

दो शब्द प्रेम में पागे हैं

शब्दों के धागों में भै'या

तुम बँधते हो आज

कुमकुम का कर तिलक भाल पर देती तुम्हें स्नेह का राज

जनम जनम तक रखना भैया तुम मेरी राखी की लाज

वर्षा ऋतु आई है

लेखिका - पद्यमनी साहू

नव जीवन साथ लाई है।

ग्रीष्म से तपती धरा पर

अमृत धार बरसाई है।।

सुखते जल मण्डल में

मौजो की बहार लाई है।

तितली नाचे भौंरे गाये

मछली मेंढक मौज उड़ाये।

इतनी खुशियां लाई है

वर्षा ऋतु आई है।।

फूलों की खुशबू से

महका है चमन सारा।

नजरें जहाँ भी जाती है

भा रहा हर नजारा।।

कलियों पर मंडराते भंवरे

प्रेम का गीत सुनते हैं।

उसने भी तृप्ति पाई है

वर्षा ऋतु आई है।

हरियाली की चादर ओढा

धरा का कर रहा श्रृंगार।

रूप और सौंदर्य का उसको

दे रहा अनोखा उपहार।

लगती धरती कितनी प्यारी

अनुपम अदभुत और न्यारी।।

दृश्य मनोहर छाई है

वर्षा ऋतु आई है।

सूरज आया

लेखक - बलदाऊ राम साहू

बड़े सवेरे सूरज आया

पंछी ने हमें बतलाया

चुभती गरमी तुम देना मत

किरणों को जाकर समझाया।

तभी पेड़ के पत्ते बोले

आहिस्ता-आहिस्ता डोले

ठंडी हवा चली पुरवाई

मुर्गों ने जब बाँग लगाई।

गौरैया आई कहीं से उड़कर

नाच दिखाई वह फूदककर

मुनिया गा रही थी गाना

कौए ने तब मारा ताना।

कहीं दूर से आया कबूतर

पानी पीया वह उतरकर

मुनिया उसको दाना दे दी

कबूतर ने आभार जताया।

हरियाली

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

पौधा एक लगाकर देखो, हरियाली छा जायेगी।
महक उठेंगे बाग बगीचे, चिड़िया गाना गायेगी।।

झूम उठेंगे पौधे सारे, नदियाँ भी लहरायेंगी ।
चहक उठेंगी चिड़ियां सारी, अपनी प्यास बुझायेंगी ।।

हरी भरी पेड़ों की छाया, राही भी सुस्तायेंगे ।
खूब लगेंगे मीठे फल जब, बड़े मजे से खायेंगे ।।

शुध्द हवा जब आयेगी तो, दिल भी खुश हो जायेगा ।
रहें स्वस्थ बच्चे बूढ़े सब, बीमारी भग जायेगी ।।

आओ साथी मिलकर सारे, हम भी पेड़ लगायेंगे ।
अपनी धरती अपनी माटी, इसको स्वर्ग बनायेंगे ।।

पहेलियाँ

रचनाकार - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

1. एक महल में है
   एक प्रमुख व्दार
   जहाँ बैठी इक महारानी
   और बत्तीस पहरेदार

2. एडिसन ने किया खोज
   घर-घर दिखता रोज
   रोशनी नित फैलाता है
   अंधेरा दूर भगाता है

3. एक गुरू की आज्ञा से
   एक चेला चले अकेला
   बहता जल थाम दिया
   कौन गुरू कौन चेला

4. बालक में मैं इक बार
   बलशाली में आऊँ दुबारा
   नहीं मिलूँगा तुम्हें बजट में
   बताओ तो मैं कौन हूँ यारा

5. कई रंगों में परिधान मेरा
   मैं कलगी से सर सजाऊँ
   बादल गरजे पानी बरसे
   मैं परिन्दा नाचूँ-गाऊँ ।

   उत्तर - 1. मुँह, जीभ और दाँत; 2. बिजली का बल्ब; 3. गुरू धौम्य और आरुणि; 4. ' ल ' वर्ण; 5. मोर.

May You Fly

Author - Tikeshwar Sinha "Gabdiwala"

May you fly, may you fly
Go up and touch the sky
Keep smiling always
Never cry, never cry

May you fly, may you fly

O! Look at the sunshine
What a joy, what a joy
Never forget that you have to
Just try, and try

May you fly, may you fly

चुटकुले

रमन की पत्नी बादाम खा रही थी...।

रमन- मुझे भी टेस्ट कराओ।

पत्नी ने एक बादाम रमन के हाथ में रख दी, बाकि खुद खाने लगी।

रमन बोला- बस एक ही...!

पत्नी ने झल्लाकर कहा- हां, बाकी सबका टेस्ट भी ऐसा ही है...।

लड़की – सुनो, मैं ऐसे लड़के से शादी करुंगी जिसका करोबार ऊंचा हो!

लड़का – फिर तो मेरे से कर लो शादी

लड़की – क्यों?

लड़का – क्योंकि मेरी पहाड़ पर नाई की दुकान है।

पप्पू दारू पी के ताला खोलने लगा,

हाथ कापने की वजह से ताला नहीं खुला

चंपू- मैं खोल दूं...।

पप्पू- मैं खोल लूंगा, तू घर को पकड़ बहुत हिल रहा है...।

चम्पा बोली - क्या संयोग है! मैंने 'दो जासूस' फिल्म देखी थी और मुझे जुड़वां बालक हो गए।'

चमेली बोली - 'ओहो.. तभी मुझे 3 पुत्र हुए क्योंकि मैंने ठीक पहले 'अमर-अकबर-एंथोनी' देखी थी।'

तभी अचानक प्रेग्नेंट कनक चीख पड़ी - 'हाय! अब तो गजब हो जाएगा। मैंने कल ही 'अलीबाबा और 40 चोर' देखी है!'

नवाचार - कला कौशल

लेखिका एवं चित्र - स्नेहलता टोप्पो

शालेय गतिविधियों में कला कौशल का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है. बच्चों के मानसिक विकास व आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए उन्हे विभिन्न कलाओं से अवगत करा निरंतर अभ्यास करना जरूरी है.समय के साथ बच्चों में निखार आता है.

कला कौशल व्यक्तित्व के विकास का प्रथम सोपान है.चूँकि इसमें बच्चे मिलजुकर कार्य करते हैं तो समूह के महत्व को जान पाते है. एक-दूसरे

से ज्यादा घुलते-मिलते हैं.अपनी चीजें बाँटकर चित्रकला, अथवा अन्य गतिविधि को उत्साहपूर्वक करते हैं.

नैतिकता का विकास,आत्मविश्वास,व्यक्तित्व निखारने में कला कौशल का महत्वपूर्ण योगदान है. इसी कड़ी में बच्चों ने सरकल आर्ट,पेपर कटिंग करके मनमोहक पेंटिंग, टूटे आईने से फूलदान,गुलदस्ते, मिट्टी के खिलौने, कागज की गुड़िया, तितली व अन्य सुन्दर वस्तुओं को सीखकर बहुत उत्साही व खुश दिखाई देते हैं.और ऐसी गतिविधियाँ बच्चों की अनुपस्थति पर भी प्रभाव डालती है.

शिक्षा हो या कला नवाचार बच्चों को आकर्षित करता है.

<u>नवाचार – शैक्षणिक भ्रमण</u>

लेखक एवं चित्र - नरोत्तम कुमार साहू

शिक्षा का मूल उद्देश्य आत्मनिर्भर बनाना होता है प्रायः बच्चों को किताबी ज्ञान देकर हम सरकारी नौकरी के लिए तैयार करते है इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य नौकरी करना हो तो समाज मे नौकर ही पैदा होंगे. इन विसंगतियों को दूर करने के लिए वर्तमान समय मे रोजगारोन्मुख शिक्षा की महति आवश्यकता है. इसी तारतम्य में रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करते हुए शासकीय पूर्व माध्यमिक एवं हाई स्कूल बठेना, पाटन के बच्चों को मुर्गी पालन, बकरी पालन तथा दुग्ध शुध्दता मापन एवं संग्रहण केंद्र का शैक्षणिक भ्रमण शिक्षक नरोत्तम साहू के मार्गदर्शन में कराया गया. बच्चों ने लैक्टोमीटर से दूध की शुध्दता मापन, अल्कोहल टेस्ट एवं संग्रहण का अवलोकन किया, राइस मिल में जाकर मशीनों के क्रियाकलाप को

जाना, बकरियों के नस्ल एवं उनके रोगों के बारे में जानकारी ली तथा मुर्गी पालन को व्यावसायिक रूप में किस प्रकार अपनाया जा सकता है इसके बारे में विस्तृत जानकारी ली. बच्चों ने स्वरोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने की सीख इस शैक्षणिक भ्रमण के माध्यम से ली. बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बौध्दिक एवं अंतर्निहित गुणों के विकास के साथ साथ उनके भविष्य को देखते हुए स्व रोजगार एक अच्छा माध्यम हो सकता है इसी सोच को आगे बढाते हुए बच्चों को आसपास कामगारों एवं स्व रोजगार क्षेत्रों से सीखने का अवसर प्रदान किया जा रहा है.

संस्मरण - व्यावहारिक ज्ञान

लेखिका - सेवती चक्रधारी

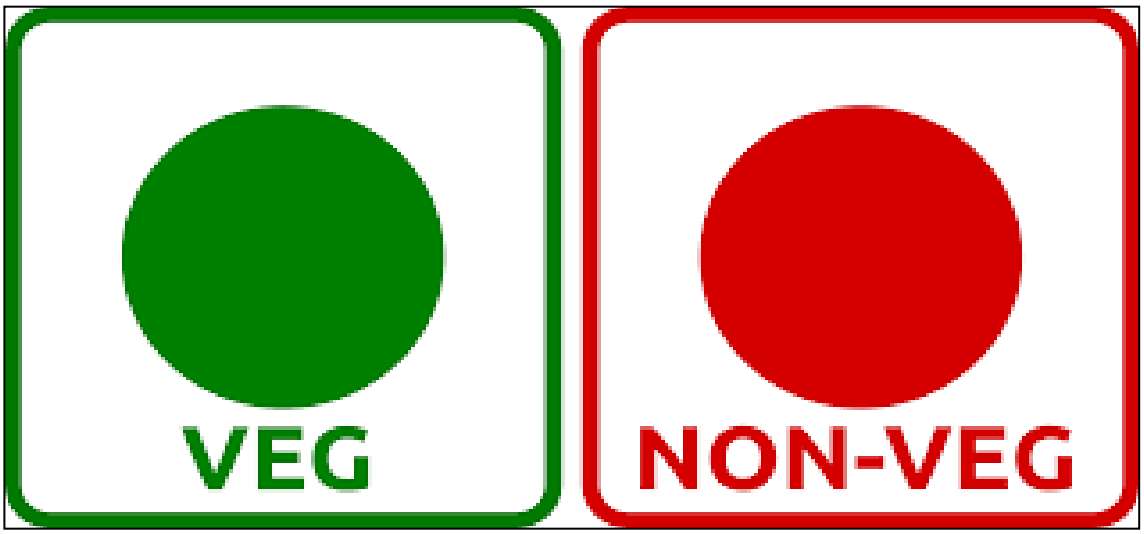

बात पिछले सत्र की है,मै कक्षा 3 मे पढा रही थी. तभी अन्य कक्षा की एक छात्रा आई और उसने सारे बच्चो को 2 अलग अलग तरह की चाकलेट दी. उस दिन उसका जन्म दिन था. उसने मुझे भी चाकलेट दी. मेरा ध्यान चाकलेट के रैपर पर बनी green dots निशान पर गया. पहले मैने बच्चो को यह बताया कि इस तरह के किसी निशान को logo कहते हैं. फिर बताया कि जब किसी खाद्य पदार्थ पर इस तरह का green dot होता है तो वह खाद्य पदार्थ पूर्ण रूप से शाकाहारी है और जब किसी खाद्य पदार्थ मे इस तरह का red निशान हो तो उस खाद्य पदार्थ मे कुछ मात्रा मे मासांहार होता है. इस बात को आप सब को बताने का मेरा यह मकसद है कि हमारे बच्चे इस तरह की कई बातो को नही जानते. जैसे अगर किसी इमारत मे या दुकान मे entry लिखा हो तो अंदर जाना है और exit लिखा हो तो बाहर निकलना है. दवाईयो मे जैसे painkiller लिखा है तो वह दर्द की दवाई है, अगर ear drop लिखा है तो वह कान की या eye drop है तो वह आंख की दवाई है. किताबी ज्ञान तो हम रोज देते हैं, क्यों न थोड़ा व्यावहारिक ज्ञान भी दिया जाए.

अजादी बर

लेखक - नेमीचंद साहू (गुल्लू)

अतेक लड़िस पुरखा मन

जान लअपन गंवादिन|

अजादी ल दे के आखिर

नाव ल अमर करादिन ||

झुकय नही काकरो आघू

अइसन अंदोलन चला दिन|

मरगे कटगे तभो ले

नाव ल अमर करादिन ||

जुरमिल लड़िन सबोझन

बइरी ल लोहा मनादिन |

टक्कर ले टक्कर देके

नाव ल अमर करादिन ||

घर-दुआर क संसो छोड़

जीत के डंका बजादिन |

इकलौता बेटा मरगे

नाव ल अमर करादिन ||

कतको मॉग उजड़गे

फॉसी म घलो चढ़ादिन|

महतारी के मान रखिन

नाव ल अमर करादिन ||

अनियाय ले लड़के हमर

झंडा ल सुघ्घ फहरादिन

बनगे पुरोधा भारत के

नाव ल अमर करादिन ||

इही ल मया कहिथे न

लेखक - श्रवण कुमार साहू "प्रखर"

बदरी हे कारी कारी,

छाये हावय मतवारी।

धान के बिजहा हे पिवरा,

तरसत हे सब के जीवरा।।

इही ल मया कहिथे न.

गिरत हे रिमझिम पानी,

चुहत हे ओरिछा छानी।

माते हावय जी किसानी,

झूमे नाचे जिनगानी।।

इही ल मया कहिथे न.

बिजली चमकत हे लाली,

मौसम के रंग गुलाबी ।

हरियर दिखे सब डाली,

लईका बजावे ताली ।।

इही ल मया कहिथे न.

खुलखुल हांसत हे गोरी,

लमाये मया के डोरी ।

सुम्मत के बांधे डोरी,

करमा गावत हे होरी,

इही ल मया कहिथे न.

करिया बादर

लेखक - बलदाऊ राम साहू

करिया बादर आही संगी,

सब के मन हरसाही संगी।

झिमिर-झिमिर पानी गिरही

कमिया मन मुसकाही संगी।

तरिया, नरवा, नदिया भरही ,

सब मन मजा उड़ाही संगी।

मछरी, मेचका कूद-कूद के,

मस्त मल्हारी गाही संगी।

रुख - राई जम्मो हरियाही,

सुग्घर रूप बनाही संगी।

बादर ऊपर जब बादर छाही,

सुरुज हर असकटाही संगी।

किसानी के दिन आगे

लेखक - मनोज कश्यप

नांगर अऊ तुतारी के

जुड़ा अऊ पंचारी के

रापा गैंती कुदारी के

मनटोरा मोटियारी के

मनोज ला सुरता आगे

किसानी के दिन आगे ।

कबरा लाल धौंरा के

खुमरी अऊ कमरा के

आनी बानी रंग मोरा के

बांटी अऊ भौंरा के

भाग फेर जागगे

किसानी के दिन आगे ।

बादर अऊ पानी के

खपरा खदर छानी के

डोकरा डोकरी कहानी के

लिमऊ आमा चटनी के

दिन फेर लकठियागे

किसानी के दिन आगे ।

धान खेती करइया के

जामुन लीम छईंया के

गीत ददरिया गवइया के

गोंदली बासी अमरईया के

सबके मन उम्हियागे

किसानी के दिन आगे ।

चंद्रयान-दू (सरसी छन्द)

लेखक - कमलेश कुमार वर्मा

चंद्रयान-दू के भारत हा, करत हवय अभियान।

येकर पाछू वैज्ञानिक मन, देवत हे बड़ ध्यान।।

लइकापन मा चंदा मामा, कहिके गावन गान।

उँहे पहुँचही अब भारत के, दूसर बेरा यान।।

भेद खोलही नवा नवा अब, इसरो चन्द्र विमान।।

दक्षिण कोती जाके लाही, पानी-खनिज निशान।।

अंतरिक्ष मा पकड़ बाढ़ही, दुनिया मा सम्मान।

बने सफलता पाही येहा, लाही नवा प्रमान।।

दू झन बेटी अपन हाथ मा, येकर धरे कमान।

श्रीहरिकोटा के धरती ले, करही ये प्रस्थान।।

चीला रोटी

लेखक - भानुप्रताप कुंजाम 'अंशु'

दाई बनाथे चीला रोटी ।
बढ़ मिठाथे चीला रोटी ।

राजू , रानी अउ छोटी ,
सबला भाथे चीला रोटी ।

डोकरी दाई अउ ममादाई ल,
बढ़ सुहाथे चीला रोटी ।

हरेली के तिहार म,
घर घर बनाथे चीला रोटी ।

चऊंर पिसान के बनाथें,
जेला कहिथे चीला रोटी ।

छत्तीसगढ़ के नारी

लेखक - श्रवण कुमार साहू ''प्रखर''

कारी ल कारी झन समझव,येहा छत्तीसगढ़ के नारी ये–

श्रध्दा के इही ह फूल हरे,पूजा के येहा अधिकारी ये

कोनों कहिथे येला अबला, कोनो कहिथे ये बिचारी ये

कोनो कहिथे नारी ह तो, बस दया के अधिकारी ये

नर ल नारायण बना देथे, वोहा अईसन महतारी ये

जब 2 नर म बिपत पड़थे, नारी ह वोकर सेवा करथे

जब देश धरम बिपत पड़थे,नारी ह वोकर बर लड़थे

ममता बर केंवची फूल हरे,अउ बैरी बर छुरी कटारे ये

श्रद्धा से मुड़ी नवा ले तै, वोहा तोला सब कुछ दे देही

कोनों बेटी बर आँखी फोड़े,तोर जीवरा ल वो ले लेही

समता ममता अउ दया धरम के,नारी ह फुलवारी ये

नारी के आँसू रामायण, वोकर हर करनी ह गीता ये

माँ बनगे त वोहा यशोदा, धरम राखे बर सीता ये

छत्तीसगढ़ के संस्कृति के, वोहा सौंहत चिन्हारी ये

वोहा बहिनी के राखी ये, वो जनम देवैया महतारी

बाबू के बेटी दुलौरिन, वो जिनगी के संग संगवारी ये

वाणी म वोहा शारद ये, वोहा काली के किलकारी ये

वो पथरा जईसन अहिल्या, वोमा शबरी के हे भक्ति

राजिम, करमा के रूप धरे, वोमा दुर्गा के हे शक्ति

धरती दाई वोला कहिथे, वो जग जननी अवतारी ये

झड़ी

योगेश ध्रुव "भीम"

चारो मुड़ा चिरई जाम कस |
तेहर नंगत अंधियारे हावस ||

फुसुर फुसुर तेहर गिरथस |
लागत कोड़हा छनके कस ||

अंधियारे हावस तेहर जइसे |
इंदर देव ह पहरा देवत हावे ||

तोर गिरे ले धरती मैंय्या के |
सुसी घलो ह बुतावत हावे ||

डबरा खोधरा घलो ह भरगे ।
गिंधोल मन नरयावत हावे ॥

झिंगरा मन ह नाचत घलो न ।
बत्तर किरा ह उड़ावन लागे ॥

झड़ी तोरे गिरे ले रीझत मन ।
खुलगे भाग ह हलधरिया के ॥

सँझकेरहा ले उठ के घलो ।
नांगर खेत म जोतत हावे ॥

अईसे गिरथस कलेचुप तय ।
जइसे मौनीबबा बने हावस ॥

इसने घलो तेहर गिर झड़ी ।
दगा झन दे एसो के साल म ॥

नानचुन लयिका

लेखक - संतोष कुमार साहू "प्रकृति"

१

नानचुन लयिका जान के हमला, नई डलवाना रे।

लुक लुक लक लक, लुक लुक लक लक।।

अकल पीलारी जान के हमला, नई तरसाना रे।।

लुक लुक लक लक, लुक लुक लक लक।।

चक्कर भौंरी चक्कर भौंरी, नाच नचा देबोन।।

२

स्कुल म बड मजा आथे , डर नई लागे एकोकनी।

जीहां जम्मो लयिका पढथे, चाहे बाबु चाहे नोनी।।

घर ले बढिया स्कुल हाबे, कोनो नई हे अनजानी।

भौंरा बांटी खेले ल खेलके, डांढ बनाबोन नानचुन?।

३

पढे बर नई लागे थोरकिन, हमला कोनो आनाकानी ।

होशियार बनबोन देखही दुनिया, नई होय कोनो मनमानी।।

नोनी बाबु आगु बडबोन, देखही जम्मो मनखे परानी।

आगु आगु बढते रहिबोन, चाहे सुखारो बिंदिया रानी।।

४

जिहाद बनाबोन किसम किसम के, राकेट ल उडाबोन जी।

मंगल म कबड्डी खेलबोन, चंदा म बिल्लस ढुलाबोन जी।।

नरवा ढोरगा नई तो जावन, झटकुन स्कुल जाबोन जी।

ज्ञान दीया ल मन भरके, अंधियार ल दुरिहा भगाबोन जी।।

पानी बरसा दे

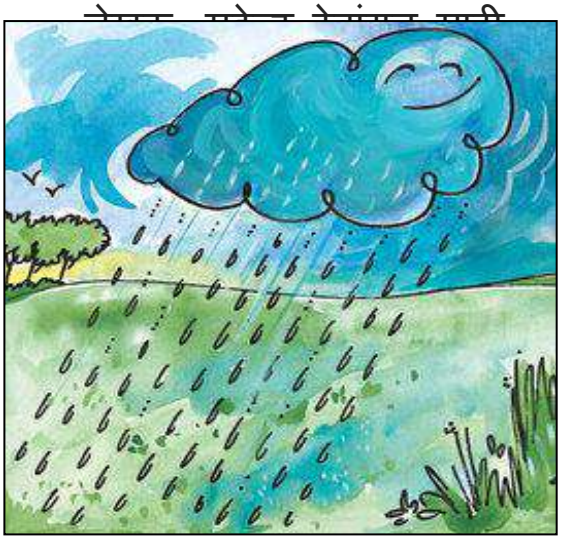

तोर अगोरा हावय बादर, सबझन देखत रस्ता ।
कब आबे अब तिही बता दे, हालत होगे खस्ता ।।

धान पान सब बोंयें हावय, खेत म नइहे पानी ।
कोठी डोली सुन्ना परगे, चलय कहाँ जिनगानी ।।

बादर आथे उमड़ घुमड़ के, फेर कहाँ चल देथे ।
आस जगाथे मन के भीतर, जिवरा ला ले लेथे ।।

माथा धर के सबझन रोवय, कइसे करे किसानी ।
सुक्खा हावय खेत खार हा, नइहे धान निशानी ।।

किरपा करहू इन्द्र देव जी, जादा झन तरसावव ।
विनती हावय हाथ जोड़ के, पानी ला बरसावव ।।

सौंधी सौंधी खुशबू हा जब, ये माटी ले आही ।
माटी के खुशबू ला पा के, माटी खुश हो जाही ।।

बम्बरी के फूल

लेखक - श्रवण कुमार साहू"प्रखर"

सावन ल देख के,

बम्बरी ह घलक फूल गे।

देख तो वोकर रूप ह,

बड़ सुग्घर खुलगे।।

लोहा कस करिया तन म,

सोनहा फूल फुले हे।

हरियर लुगरा सहिन,

वोकर पाना सुग्घर खुले हे।।

बम्बरी के कली लागे,

नोनी के नाक के फूल

बम्बरी के फूल लागे,

गोरी के कान के झूल।।

बम्बरी म चढ़े हे,

देख तो तेलहा चांटी।

बम्बरी के फर जईसन,

गुड़िया के छाँटी।।

पाना अउ फूल देख,

कहाँ लुकागे वोकर काँटा।

सबके जीवन म अईसन,

आथे सुख दुःख के बाँटा।।

बिपत के पतझड़ म,

जेन मनखे ह झुलही।

सावन के सुख म,

बम्बरी कस फुलही।।

बरस जा बादर कारी

लेखक - कमलेश कुमार वर्मा

काबर तैंहा नइ बरसत अस, अब रे बादर कारी।

उमड़-घुमड़ के घेरी-बेरी, लालच देथच भारी।।

गरज-चमक के आस जगाथस, पर नइ रेंगय धारी।

दाना-पानी कइसे मिलही, तहीं बता उपकारी।।

धान सुखावत खेत-खार मा, फटगे हे दनगारी ।

लांघन मरही जीव-जंतु मन, दुच्छा होही थारी।।

कहाँ इहाँ अब घर मा होही, बर-बिहाव तइयारी।

अपन गला मा डोरी कसही, कइ किसान लाचारी।।

मनखे सब गोहार लगावत, शिव शंकर- भंडारी।

दरस दिखा के अब तँय कर दे, उर्रा खेती-बारी।।

बरसा के दिन आवत हे

लेखक - महेन्द्र देवांगन "माटी"

टरर टरर मेचका गाके, बादर ल बलावत हे ।
घटा घनघोर छावत, बरसा के दिन आवत हे ।

तरबर तरबर चांटी रेंगत, बीला ल बनावत हे ।
आनी बानी के कीरा मन , अब्बड़ उड़ियावत हे ।
बरत हाबे दीया बाती, फांफा मन झपावत हे ।
घटा घनघोर छावत, बरसा के दिन आवत हे ।

हावा गररा चलत हाबे, धुररा ह उड़ावत हे ।
बड़े बड़े डारा खांधा , टूट के फेंकावत हे ।
घुड़ुर घाड़र बादर तको, मांदर कस बजावत हे ।
घटा घनघोर छावत , बरसा के दिन आवत हे ।

ठुड़गा ठुड़गा रुख राई के, पाना ह उलहावत हे ।
किसम किसम के भाजी पाला, नार मन लमावत हे ।
चढहे हाबे छानही में, खपरा ल लहुंटावत हे ।
घटा घनघोर छावत , बरसा के दिन आवत हे ।

सबो किसान ल खुसी होगे , नांगर ल सिरजावत हे ।
खातू माटी लाने बर , गाड़ा बइला सजावत हे ।
सुत उठ के बड़े बिहनिया, खेत खार सब जावत हे ।
घटा घनघोर छावत , बरसा के दिन आवत हे ।

बरसा

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

बरसा के दिन आगे जी ,

झमाझम गिरत हे पानी।

परछी हा भरा गेहे ,

टप टप चुहत हे छानी।

ओरछा होगे हे घर दुवार हा,

जगा जगा बाल्टी ला मढहात हे।

छानी ला लहुटाय नइहे,

बबा ह बड़बड़ात हे।

स्कूल हा खुल गेहे,

लइका मन हा जावत हे।

डबरा सबो भरा गेहे,

चोरो बोरो आवत हे।।

<u>विज्ञान के खेल - फूंक मारकर ईंट उठाना</u>

प्रस्तुतकर्ता - अभिषेक शुक्ला

<u>उद्देश्य</u> - बच्चों को दाब और क्षेत्रफल का संबंध समझाना.

<u>सामग्री</u> - एक पालीथीन की थैली,खाली पेन, एक ईंट.

<u>गतिविधि</u> - पालीथीन की थैली में एक ओर छोटा सा छेद करके उसमें खाली पेन डालकर बांध लें. थैली के ऊपर ईंट रखकर पेन से फूंक मारें. थैली में हवा भरने पर ईंट ऊपर उठ जाती है.

बरसात

लेखिका - पुष्पा नायक

तन मन ह सब के जुड़ागे,

देखौ घटा घलो करियागे,

चारो मुड़ा रुख राई हरियागे,

मोर खेत अउ खलिहानलहलहागे,

चिखला माटी ह माड़ी तक अमागे,

लइका मन के जइसे तिहार आगे,

जब ले बदरा के बयार आगे,

डबरा खोचका तरिया कस भरागे,

मेचका के टर टर,

चिरई चिरगुन के चहचहई,

निक लागे मोर गाँव अउ गँवई,

जब ले बरखा बरसागे।

बरसीस बादर

आज जम के बरसीस बादर
धरती ल पानी पोरसीस बादर

अँटाये खोचका डबरा ला
डब-डब ले भरीस बादर

सुक्खा करियाये रुखराई ला
सुग्घर हरिहर करीस बादर

गरजत चमकत अउ बरसत
सुख-सोहर गीत गाईस बादर

चीखला-माटी मं रंग-झाँझर
लइका मन ला नचाईस बादर

बादर लबरा होगे

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

अब असाढ़ ले सावन आथे
तरिया नदिया सबो सुखागे
तोर अगोरा म बइठे हन सब
बिन पानी सरी बुध छरियागे
जीव जिनावर तड़पे लागे
जोते खेत करवाही गड़थे
तीप के गोड़ के भोमरा होगे
लागत हे बादर लबरा होगे

तात तात लागे भिनसरहा
घाम घरी कस सुरुज ह पेरहा
अब्बड़ आस ले नजर गडाहे
भंडार बरसही सोच किसनहा
छोल चाँच तैयार खेत ह
बाट जोहत तैयार नगरिहा
आही बरोडा फेर उड़ाही
छाये बादर कबरा होगे
लागत हे एसो बादर लबरा होगे....

मय महानदी के पानी अंव

इस गीत में छत्तीसगढ की प्रमुख नदियो का नाम भी आया है

रचनाकार - संतोष कुमार साहू (प्रकृति)

मय महानदी के पानी अंव, मय अमरित अमर कहानी अंव।

मय महानदी के पानी अंव,

मय लोटा भर के जुबानी अंव।।

सिरिंगि सिहावा दाई ददा मोर, मय रिषि मुनी के बानी अंव।।

१

कुंड ले निकल के बोहावत रहिथंव , मया दुलार बोहाथंव।

मोर मया म गंगरेल दुधावा, हीराकुंड ल अघाथंव ।।

दुरुग भिलयी के पियास बुझाथंव, लोहा बर मय नानी अंव।।

मय महानदी के पानी-------।।

२

शिवनाथ खारुन अरपा हसदो, मोरेच मया ल पाथय।

जोंक तांदुला मनयारी ह, मोरेच संग बतियाथय।।

पैरी सोढु संग संगवारी, मय ओखर बर संगवारी अंव।।

मय महानदी के पानी-------।।

३

धमतरी राजिम चंपारण ह , मोरेच महिमा ल गाथय।

महासमुंद आरंग सिरपुर ह ,मोरेच संग ममहाथय।।

सबुरी नारायण चंदरपुर म्, मय जुडा बोईर के पानी अंव।।

मय महानदी के पानी------।।

४

छत्तीसगढ़ मोर कोरा म खेलय, जेन हर धान कटोरा आय।

मय पिरित गठिया के रखथय, जयिसे दाई के जोरा आय।।

छत्तीसगढ़िया सबले बढिया, मय ओखर बर महतारी अंव।।

मय महानदी के पानी------।।

५

बारी बखरी खेती किसानी, मोर मया म हरियाथय।

किसम किसम के मया ल पाके, सबो बर मया बोहाथय।।

मत मारव गा मोला तुमन , तुंहर बर मय मामी अंव ।।

मय महानदी के पानी-----।।

६

अटल नगर के पियास बुझाथंव, जिंहा हे जंगल सफारी।

मंत्रालय मोर मया ल पाथय, नेता करमचारी।।

जतन ल मोरे करत रहवगा, मय मुकतांगन चिनहारी अंव।।

मय महानदी के पानी------।।

७

मोला जेन हर मयिलावत हे ,ओ हर दुख ला पावत हे।

घुरवा मोला बनाके गा, जहर म जिनगी बितावत हे।।

मोर मया ल छोडही जे हर, मय ओखर बर सुनामी अंव।।

मय महानदी के पानी------।।

मोर गांव

लेखक एवं चित्र - बलराम नेताम

आनी बानी के हे रुक राई सुग्घर हे ओकर छांव,

प्रकृति के कोरा म बसे हावय मोर गांव,

ठाकुर देव के जोहार लागव,

शीतला दाई ला माथ नवाव

दाई ददा के परथन पांव,

बढ़ सुघ्घर हे संगी मोर गांव।

तरिया पार के पिपर पेड़,

खेत खार अउ मेड़,

चिरई चिरगुन के चिव चाव,

बढ़ निक हे संगी मोर गांव।

आनी बानी के नता गोता ल मानथे,

जौन गांव म रहिथे तौन जानथे,

सगा पहुँना आय ले कांस के लोटा म देथे पानी,

ये तो हरे संगी मोर गांव के कहानी।

मोर दुलौरिन दाई

लेखक - श्रवण कुमार साहू "प्रखर"

मोर दुलौरिन दाई तेहा,

कहां चल देस आजा ओ।

खोजत हावंव मेहा दाई,

तोर बेटा दुलरवा राजा ओ।।

नौ महीना ले तेहा दाई,

अपन कोरा म सिरजाये।

मोर सुख के खातिर दाई,

तै लाखों दुख ल पाये।

कहां चल देस तेहा दाई,

रोवत हंव बेटा राजा ओ--

अंगरी धर के तेहा दाई,

मोला रेंगे ल सिखाए ।

नई जानव खाये बर तेन ल,

खाए बर तै सिखाए ।।

काबर तेहा रिसा गेस दाई,

अब तो तेहा आजा ओ----

कलप कलप के मन ह रोये,

बोहाए आँसू के धारा न।

तोला मन ह खोजत हावय,

गांव गली अउ पारा न।।

काबर कर देस तेहा दाई,

मोला तै बेसहारा ओ....

तोर बिना मैं कइसे जिहूँ,

कईसे जिनगी चलाहूँ ओ।

आही जब बिपत ओ दाई,

फेर कोन ल मै गोहराहूँ ओ।।

मोला कोन बलाही दाई,

कहिके बेटा राजा ओ---

तोर सुरता ल मेहा दाई,

कइसे करके भुलाहूँ ओ।

तोर बिना मैं ये दुनियाँ म,

कलप कलप मर जाहूँ ओ।।

मोर अंतस के पीरा ल दाई।

कोन ल मेहा देखाहूँ ओ---

राजा के दरबार

लेखक - बलदाऊ राम साहू

मम्मी मोला देवा दे

छोटकु मोटर-कार।

ओमा बइठ के जाहू

राजा के दरबार।

राजा के दरबार,

महामंत्री बन जाहूँ।

फरियादी ह आही

ओला नियाय देवाहूँ।

‘बरस’ कहत हे आज

महाराजा खुश होंही।

अउ खुश हो के मोला

अड़बड़ ईनाम देही।

सावन के झूला

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

सावन के झूला झूले मा, अब्बड़ मजा आवत हे।
सबो संगवारी मिलके जी, सावन के गीत गावत हे।।

हंसी ठिठोली अब्बड़ करत, झूला मा बइठे हे।
पेड़ मा बांधे हाबे जी, डोरी ला कसके अइठे हे।।

दू सखी हा बइठे हे जी, दू झन हा झूलावत हे।
पारी पारी सबो संगी, एक दूसर ला बुलावत हे।।

हांस हांस के सबोझन हा, अपन अपन बात बतावत हे।
सावन के आगे महीना जी, सबोझन झूला झूलावत हे।।

सावन के मजा आवत न इये

लेखक - जी. आर. टंडन

एसो सावन में खेती खार, हरियावत न इये ना।

राखी के संदेश, सावन एसो, बनगे कलेश।

डबरा के मेनका चलो,

टरटरावत न इये ना।।

जगा जगा कारखाना होगे, सोचव अब मनुखहो।

बरखा के पानी ला रोकव, में ड में बोवव पेड रुख हो।

आमा अमली ददा दाई बरोबर,एकर मया भुलाने न इये ना।,।।

चारतेन्दू महुआ, बर, पीपर, अब्बड़ सगा हे ममा मामी,

कुन्दरु करेला मोर कका काकी, भाजी हे, भौजी पटवा अमारी।

नरवा गरुवा घुरुवा बारी, चिन्हारी के मूनगा मितान आवत न इये ना।।

छत्तीसगढ़ के सावन मोर दीदी ला काबरा रोवावत हस।

भाई बहिनी बर राखी के, संदेश बनके आवतहस।

झूलना अउ सोलहसिंगारसावन के, मनभावत न इये ना।।।

एसो सावन खेतीखार हरियावत न इये ना।।।

सोन चिरई

लेखक - दिलकेश मधुकर

मोर छत्तीसगढ़ के सोन चिरैया,
स्कूल-स्कूल जाहि ।
मोर किशोरी नोनी ल,
जिनगी के पाठ पढ़ाहि।।

जतन के रद्दा ऐहर बताहि,
तन ल सुघ्घर बनाहि।
पोषक आहार मिलय सब झन ल,
अइसन उपाय सुझाहि।।

बाढ़त उमर म अड़बड़ कांटा,
गली-गली म छागे।
कांटा गड़य झन पांव म कोकरो,
अइसन रद्दा बनाहि।।

मोर किशोरी दुर्गा,लक्ष्मी,
इंदिरा, प्रतिभा, किरण बनहि।
सोन चिरैया के गोठ ल पा के,
दुनिया म नाम कमाहि।।

स्कूल जाबो

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

स्कूल जाबो पढ़े बर ,
जिनगी ला गढे बर।
मन लगा के पढ़बो ,
तभे तो आघू बढबो ।

नवा नवा पुस्तक मिलही
नवा डरेस सिलवाबो ।
बढ़िया बढ़िया खाना मिलही ,
पेट भर भात खाबो ।

नवा नवा संगवारी बनाबो ,
अब्बड़ मजा आही ।
किसम किसम के खेल खेलबो ,
गुरु जी मन सिखाही ।

नवा नवा कहानी किस्सा,
सुन के हम आबोन ।
घर में आ के खुसी खुसी ,
सबझन ला बताबोन ।

स्कूल मोर मितान

लेखक - लुकेश्वर सिंह ध्रुव

स्कूल मोर मितान रे संगी

स्कूल मोर मितान ।

जहाँ मिलथे क ख ग घ ले हमन ल गियान

स्कूल मोर मितान रे संगी

स्कूल मोर मितान ।

जहाँ खेल खेल म सिखथन हमन गियान

स्कूल मोर मितान रे संगी स्कूल मोर मितान ।

जहाँ मिलथे पौष्टिक खाना तिहा लगाथान हमन धियान

स्कूल मोर मितान रे संगी स्कूल मोर मितान ।

जिहा होथे सबके सम्मान उहाँ पाथन हमन गियान

स्कूल मोर मितान रे संगी स्कूल मोर मितान ।

जिहा होते एसएलए ले परीक्षा उहा बढ़ते हमर धियान

स्कूल मोर मितान रे संगी स्कूल मोर मितान ।

पढ़बो पढ़हाबो आगे बढ़बो एला तेहा जान

स्कूल मोर मितान रे संगी स्कूल मोर मितान ।

कला – कागज़ की हिलने वाली चिड़ियां

सामग्री - रंगीन मोटा कागज़, सेलो टेप, कैंची, गोंद.

विधि - चित्र में दिखाये अनुसार मोटे कागज़ को चिड़िया के रूप में काट लें और उसे सेलो टेप और गोंद से चिपका लें. अब आप इन्हें हिलाएं तो यह हिलती हैं.

भाखा जनउला

रचनाकार - दीपक कंवर

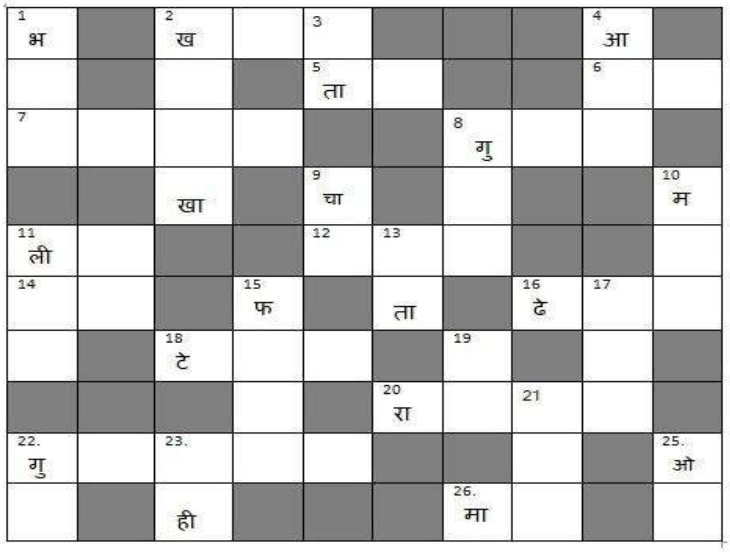

बाएँ से दाएं - 1. शंका 2. काँख 5. ताला 6. धूप 7. शहद 8. हथौड़ी 11. नीम 12. गाय का बच्चा 14. मामा 16. खटमल 18. गिरगिट 20. झापड़ 21. धान की एक किस्म 26. मक्खी

ऊपर से नीचे - 1. शंका 3. खाली 4. भरा पेट 8. मीठा व्यंजन 9. काट 10. कद्दू 11. नींबू 13. सीताफल 15. मोटरसायकल 17. दरवाजा 19. शरीर 21. बरामदा 22. मांस 23. मट्ठा 25. झोली

उत्तर

1 भ		2 ख	खो	3 री				4 आ	
र		इ		5 ता	रा			6 घा	म
7 म	धु	र	स			8 गु	टा	सी	
		खा		9 चा		झि			10 म
11 ली	म			12 ब	13 छि	या			ख
14 म	मा		15 फ		ता		16 ढे	17 क	ना
उ		18 टे	ट	का		19 दें		पा	
			फ		20 रा	ह	21 प	ट	
22. गु	र	23. म	टी	या			र		25. ओ
दा		ही				26. मा	छी		ली